# श्री हनुमान चालीसा







## संत वाणी

**पूज्य स्वामी जी ने कहा–**

- □ भक्ति सूर्य है- विवेक प्रकाश है।
- □ विवेक से शरणागति ऊपर है।

**पूज्य मोरारी बापू ने कहा–**

- □ सुमिरन गति है–प्राप्ति परमात्मा है और साथ संतों का है।
- □ विवेक ड्राइवर है, शरणागति तो पीछे दो तकिया लगाकर सो जाना है।

# स्वामी शरणानन्द जी महाराज
## द्वारा करायी जाने वाली आरम्भिक प्रार्थना

(प्रार्थना साधक के विकास का अचूक उपाय है तथा आस्तिक प्राणी का परमेंन है)

मेरे नाथ!

आप अपनी सुधामयी, सर्व-समर्थ, पतितपावनी, अहैतुकी
कृपा से , दुःखी प्राणियों के हृदय में त्याग का बल एवं
सुखी प्राणियों के हृदय में सेवा का बल प्रदान करें,
जिससे वे सुख-दुःख के बन्धन से मुक्त हो,
आपके पवित्र प्रेम का आस्वादन कर
कृत-कृत्य हो जायँ।

ॐ आनन्द ॐ आनन्द ॐ आनन्द

# मैं नहीं, मेरा नहीं

मैं नहीं मेरा नहीं, यह तन किसी का है दिया।
जो भी अपने पास है, यह धन किसी का है दिया।
देने वाले ने दिया, वह भी दिया किस शान से।
'मेरा है' यह लेने वाला, कह उठा अभिमान से।
'मैं-मेरा' यह कहने वाला, मन किसी का है दिया।।
मैं नहीं.....।।१।।

जो मिला है वह हमेशा, पास रह सकता नहीं।
कब बिछुड़ जाये यह कोई, राज कह सकता नहीं।
जिन्दगानी का खिला मधुवन किसी का है दिया।।
मैं नहीं.....।।२।।

जग की सेवा, खोज अपनी प्रीति उनसे कीजिये।
जिन्दगी का राज है, यह जानकर जी लीजिये।।
साधना की राह पर साधन किसी का है दिया।
मैं नहीं, मेरा नहीं, यह तन किसी का है दिया।।
जो भी अपने पास है, वह सब किसी का है दिया।।
मैं नहीं.....।।३।।

# सर्व हितकारी कीर्तन

हे हृदयेश्वर, हे सर्वेश्वर, हे प्राणेश्वर, हे परमेश्वर।
हे हृदयेश्वर, हे सर्वेश्वर, हे प्राणेश्वर, हे परमेश्वर।।
हे हृदयेश्वर, हे सर्वेश्वर, हे प्राणेश्वर, हे परमेश्वर।
हे हृदयेश्वर, हे सर्वेश्वर, हे प्राणेश्वर, हे परमेश्वर।।
हे हृदयेश्वर, हे सर्वेश्वर, हे प्राणेश्वर, हे परमेश्वर।
हे समर्थ, हे करुणा सागर! विनती यह स्वीकार करो।
हे समर्थ, हे करुणा सागर! विनती यह स्वीकार करो।।
भूल दिखाकर, उसे मिटाकर, अपना प्रेम प्रदान करो।
भूल दिखाकर, उसे मिटाकर, अपना प्रेम प्रदान करो।।
पीर हरो हरि पीर हरो हरि पीर हरो प्रभु पीर हरो।
पीर हरो हरि पीर हरो हरि पीर हरो प्रभु पीर हरो।।

# स्वामी शरणानन्द जी महाराज
## द्वारा करायी जाने वाली समापन प्रार्थना

मेरे नाथ!

आप अपनी सुधामयी, सर्व-समर्थ, पतितपावनी, अहेतुकी
कृपा से मानव-मात्र को विवेक का आदर तथा बल
का सदुपयोग करने की सामर्थ्य प्रदान करें, एवं
हे करुणासागर! अपनी अपार करुणा से
शीघ्र ही राग-द्वेष का नाश करें,
सभी का जीवन सेवा, त्याग,
प्रेम से परिपूर्ण हो जाय।

ॐ आनन्द ॐ आनन्द ॐ आनन्द

# ।। श्री हनुमान-चालीसा ।।

## दोहा

श्रीगुरु चरन सरोज रज, निज मन मुकुर सुधारि।
बरनउँ रघुवर विमल जसु, जो दायकु फल चारि।।
बुद्धिहीन तनु जानिकै, सुमिरौं पवन-कुमार।
बल बुधि विद्या देहु मोहिं, हरहु कलेस विकार।।

## ।। चौपाई ।।

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर।
जय कपीस तिहुँ लोक उजागर।।
राम दूत अतुलित बल धामा।
अंजनि-पुत्र पवनसुत नामा।।
महाबीर विक्रम बजरंगी।
कुमति निवार सुमति के संगी।।

कंचन बरन बिराज सुबेसा।
कानन कुंडल कुंचित केसा।।
हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै।
काँधे मूँज जनेऊ साजै।।
संकर सुवन केसरी नंदन।
तेज प्रताप महा जग बन्दन।।
विद्यावान गुनी अति चातुर।
राम काज करिबे को आतुर।।

प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया।
राम लषन सीता मन बसिया।।
सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा।
विकट रूप धरि लंक जरावा।।
भीम रूप धरि असुर संहारे।
रामचन्द्र के काज सँवारे।।
लाय सजीवन लषन जियाये।
श्री रघुबीर हरषि उर लाये।।

रघुपति कीन्हीं बहुत बड़ाई।
तुम मम प्रिय भरतहिं सम भाई।।
सहस बदन तुम्हरो जस गावैं।
अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं।।
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा।
नारद सारद सहित अहीसा।।
यम कुबेर दिगपाल जहाँ ते।
कबि कोबिद कहि सकै कहाँ ते।।

तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा।
राम मिलाय राज पद दीन्हा।।
तुम्हरो मन्त्र विभीषन माना।
लंकेश्वर भए सब जग जाना।।
जुग सहस्त्र जोजन पर भानू।
लील्यो ताहि मधुर फल जानू।।
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं।
जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं।।

दुर्गम काज जगत के जेते।
सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते।।
राम दुआरे तुम रखवारे।
होत न आज्ञा बिनु पैसारे।।
सब सुख लहै तुम्हारी सरना।
तुम रक्षक काहू को डरना।।
आपन तेज सम्हारो आपै।
तीनों लोक हाँक ते काँपै।।

भूत पिशाच निकट नहिं आवै।
महाबीर जब नाम सुनावै।।
नासै रोग हरै सब पीरा।
जपत निरंतर हनुमत बीरा।।
संकट से हनुमान छुड़ावै।
मन क्रम बचन ध्यान जो लावै।।
सब पर राम तपस्वी राजा।
तिनके काज सकल तुम साजा।।

और मनोरथ जो कोइ लावै।
सोइ अमित जीवन फल पावै।।
चारों जुग परताप तुम्हारा।
है परसिद्ध जगत उजियारा।।
साधु संत के तुम रखवारे।
असुर निकंदन राम दुलारे।।
अष्ट सिद्धि नव निधि के दाता।
अस बर दीन्ह जानकी माता।।

राम रसायन तुम्हरे पासा।
सदा रहो रघुपति के दासा।।
तुम्हरे भजन राम को भावै।
जनम जनम के दुख बिसरावै।।
अंत काल रघुबर पुर जाई।
जहाँ जन्म हरि-भक्त कहाई।।
और देवता चित्त न धरई।
हनुमत सेइ सर्व सुख करई।।

संकट हरै मिटै सब पीरा।
जो सुमिरै हनुमत बलबीरा।।
जै जै जै हनुमान गोसाईं।
कृपा करहु गुरुदेव की नाईं।।
यह शत बार पाठ कर जोई।
छूटहिं बंदि महासुख होई।।
जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा।
होय सिद्धि साखी गौरीसा।।

तुलसीदास सदा हरि चेरा।
कीजै नाथ हृदय महँ डेरा।।

।। दोहा ।।

पवनतनय संकट हरन,
मंगल मूरति रूप।
राम लषन सीता सहित,
हृदय बसहु सुरभूप।।

।। इति ।।

# काकभुशुण्डि रामायण

( रामचरित मानस उत्तरकाण्ड दोहा ६३ ( क ) से ६८ ( ख ))

।। दोहा ।।

नाथ कृतारथ भयउँ मैं तव दरसन खगराज।
आयसु देहु सो करौं अब प्रभु आयहु केहि काज।।६३(क)।।
सदा कृतारथ रूप तुम्ह कह मृदु बचन खगेस।
जेहि कै अस्तुति सादर निज मुख कीन्हि महेस।।६३(क)।।

सुनहु तात जेहि कारन आयउँ। सो सब भयउ दरस तव पायउँ।।
देखि परम पावन तव आश्रम। गयउ मोह संसय नाना भ्रम।।
अब श्रीराम कथा अति पावनि। सदा सुखद दुख पुंज नसावनि।।

सादर तात सुनावहु मोही। बार बार बिनवउँ प्रभु तोही।।
सुनत गरुड़ कै गिरा बिनीता। सरल सुप्रेम सुखद सुपुनीता।।
भयउ तासु मन परम उछाहा। लाग कहै रघुपति गुन गाहा।।
प्रथमहिं अति अनुराग भवानी। रामचरित सर कहेसि बखानी।।
पुनि नारद कर मोह अपारा। कहेसि बहुरि रावन अवतारा।।
प्रभु अवतार कथा पुनि गाई। तब सिसु चरित कहेसि मन लाई।।

।। दोहा ।।

बालचरित कहि बिबिध विधि मन महँ परम उछाह।
रिषि आगवन कहेसि पुनि श्री रघुबीर बिबाह।।६४।।

बहुरि राम अभिषेक प्रसंगा। पुनि नृप बचन राज रस भंगा।।

पुरबासिन्ह कर बिरह बिषादा। कहेसि राम लछिमन संबादा।।
बिपिन गवन केवट अनुरागा। सुरसरि उतरि निवास प्रयागा।।
बालमीक प्रभु मिलन बखाना। चित्रकूट जिमि बसे भगवाना।।
सचिवागवन नगर नृप मरना। भरतागवन प्रेम बहु बरना।।
करि नृप क्रिया संग पुरबासी। भरत गए जहँ प्रभु सुखरासी।।
पुनि रघुपति बहु बिधि समुझाए। लै पादुका अवधपुर आए।।
भरत रहनि सुरपति सुत करनी। प्रभु अरु अत्रि भेंट पुनि बरनी।।

।। दोहा ।।

कहि बिराध बध जेहि बिधि देह तजी सरभंग।
बरनि सुतीछन प्रीति पुनि प्रभु अगस्ति सतसंग।।६५।।

कहि दंडक बन पावनताई। गीध मइत्री पुनि तेहिं गाई।।
पुनि प्रभु पंचवटीं कृत बासा। भंजी सकल मुनिन्ह की त्रासा।।
पुनि लछिमन उपदेस अनूपा। सूपनखा जिमि कीन्हि कुरूपा।।
खर दूषन बध बहुरि बखाना। जिमि सब मरमु दसानन जाना।।
दसकंधर मारीच बतकही। जेहि बिधि भई सो सब तेहिं कही।।
पुनि माया सीता कर हरना। श्री रघुबीर बिरह कछु बरना।।
पुनि प्रभु गीध क्रिया जिमि कीन्ही। बधि कबंध सबरिहि गति दीन्ही।।
बहुरि बिरह बरनत रघुबीरा। जेहि बिधि गए सरोबर तीरा।।

।। दोहा ।।

प्रभु नारद संवाद कहि मारुति मिलन प्रसंग।
पुनि सुग्रीव मिताई बालि प्रान कर भंग।।

कपिहि तिलक करि प्रभु कृत सैल प्रवरषन बास।
बरनन वर्षा सरद अरु राम रोष कपि त्रास।।६६(ख)।।
जेहि बिधि कपिपति कीस पठाए। सीता खोज सकल दिसि धाए।।
बिवर प्रबेस कीन्ह जेहि भाँती। कपिन्ह बहोरि मिला संपाती।।
सुनि सब कथा समीरकुमारा। नाघत भयउ पयोधि अपारा।।
लंका कपि प्रबेस जिमि कीन्हा। पुनि सीतहि धीरजु जिमि दीन्हा।।
बन उजारि रावनहि प्रबोधी। पुर दहि नाघेउ बहुरि पयोधी।।
आए कपि सब जहँ रघुराई। बैदेही की कुसल सुनाई।।
सेन समेति जथा रघुबीरा। उतरे जाइ बारिनिधि तीरा।।
मिला बिभीषन जेहि बिधि आई। सागर निग्रह कथा सुनाई।।

।। दोहा ।।

सेतु बाँधि कपि सेन जिमि उतरी सागर पार।
गयउ बसीठी बीरबर जेहि बिधि बालिकुमार।।६७(क)।।
निसिचर कीस लराईं बरनिसि बिबिधि प्रकार।
कुंभकरन घननाद कर बल पौरूष संघार।।६७(ख)।।
निसिचर निकर मरन बिधि नाना। रघुपति रावन समर बखाना।।
रावन बध मंदोदरि सोका। राज बिभीषन देव असोका।।
सीता रघुपति मिलन बहोरी। सुरन्ह कीन्हि अस्तुति कर जोरी।।
पुनि पुष्पक चढ़ि कपिन्ह समेता। अवध चले प्रभु कृपा निकेता।।
जेहि बिधि राम नगर निज आए। बायस बिसद चरित सब गाए।।
कहेसि बहोरि राम अभिषेका। पुर बरनत नृपनीति अनेका।।

कथा समस्त भुसुंडि बखानी। जो मैं तुम्ह सन कही भवानी।।
सुनि सब राम कथा खगनाहा। कहत बचन मन परम उछाहा।।

।। सोरठा ।।

गयउ मोर संदेह सुनेउँ सकल रघुपति चरित।
भयउ राम पद नेह तव प्रसाद बायस तिलक।।६७(क)।।

सियावर रामचन्द्र की जय।
रघुवीर रामचन्द्र की जय।
पवनसुत हनूमान की जय।
उमापति महादेव की जय।
बोलो भाई सब सन्तन की जय।

## ।। गोपीगीतम् ।।

जयति तेऽधिकं जन्मना व्रजः श्रयत इन्दिरा शश्वदत्र हि।
दयित दृश्यतां दिक्षु तावकास्त्वयि धृतासवस्त्वां विचिन्वते।।१।।

शरदुदाशये साधुजातसत् सरसिजोदरश्रीमुषा दृषा।
सुरतनाथ तेऽशुल्कदासिका वरद निहनतो नेह किं वधः।।२।।

विषजलाप्ययाद् व्यालराक्षसाद् वर्षमारुताद् वैद्युतानलात्।
वृषमयात्मजाद विश्वतोभयादृषभ ते वयं रक्षिता मुहुः।।३।।

न खलु गोपिकानन्दनो भवानखिलदेहिनामन्तरात्मदृक्।
विखनसार्थितो विश्वगुप्तये सख उदेयिवान्सात्वतां कुले।।४।।

विरचिताभयं वृष्णिधुर्य ते चरणमीयुषां संसृतेर्भयात्।
करसरोरुहं कान्त कामदं शिरसि धेहि नः श्रीकरग्रहम्।।५।।

व्रजजनार्तिहन् वीर योषितां निजजनस्मयध्वंसनस्मित।
भज सखे भवत्किंकरीः स्म नो जलरुहाननं चारु दर्शय।।६।।

प्रणतदेहिनां पापकर्शनं तृणचरानुगं श्रीनिकेतनम्।
फणिफणार्पितं ते पदाम्बुजं कृणु कुचेषु नः कृन्धि हृच्छयम्।।७।।

मधुरया गिरा वल्गुवाक्यया बुधमनोज्ञया पुष्करेक्षण।
विधिकरीरिमा वीर मुह्यतीरधरसीधुनाऽऽप्याययस्व नः।।८।।

## ।। गोपीगीतम् ।।

तव कथाऽमृतं तप्तजीवनं कविभिरीडितं कल्मषापहम्।
श्रवणमंगलं श्रीमदाततं भुवि गृणन्ति ते भूरिदा जनाः।।९।।

प्रहसितं प्रिय प्रेमवीक्षणं विहरणं च ध्यानमंगलम्।
रहसि संविदो या हृदिस्पृशः कुहक नो मनःक्षोभयन्ति हि।।१०।।

चलसि यद् व्रजाच्चारयन्पशून् नलिनसुन्दरं, नाथ ते पदम्।
शिलतृणांकुरैः सीदतीति नः कलिलतां मनः कान्त गच्छति।।११।।

दिनपरिक्षये नीलकुन्तलैर्वनरुहाननं बिभ्रदावृतम्।
धनरजस्वलं दर्शयन्मुहुर्मनसि नः स्मरं वीर यच्छसि।।१२।।

## ।। गोपीगीतम् ।।

प्रणतकामद पद्मजार्चितं धरणिमण्डनं ध्येयमापदि।
चरणपंकजं शन्तमं च ते रमण नः स्तनेष्वर्पयाधिहन्।।१३।।

सुरतवर्धनं शोकनाशनं स्वरितवेणुना सुष्ठु चुम्बितम्।
इतररागविस्मारणं नृणां वितर वीर नस्तेऽधरामृतम्।।१४।।

अटति यद्भवानह्नि काननं त्रुटिर्युगायते त्वामपश्यताम्।
कुटिलकुन्तलं श्रीमुखं च ते जड उदीक्षतां पक्ष्मकृदृशाम्।।१५।।

पति सुतान्वय भ्रातृबान्धवानतिविलंह्य तेऽन्त्यच्युतागताः।
गतिविदस्तवोद्गीतमोहिताः किनव योषितः कस्त्यजेन्निशि।।१६।।

## ।। श्री रामायण जी की आरती ।।

आरति श्रीरामायनजी की, कीरति कलित ललित सिय पी की।
गावत ब्रह्मादिक मुनि नारद। बालमीक बिग्यान बिसारद।
सुक सनकादि सेष अरु सारद। बरनि पवनसुत कीरति नीकी।।१।।
गावत बेद पुरान अष्टदस। छओ सास्त्र सब ग्रंथन को रस।
मुनि जन धन संतन को सरबसे, सार अंस संमत सबही की।।२।।
गावत संतत संभु भवानी। अरु घट-संभव मुनि बिग्यानी।
ब्यास आदिकबि बर्ज बखानी। कागभुसुंडि गरुड़ के ही की।।३।।
कलिमल हरनि बिषय रस फीकी। सुभग सिंगार मुक्ति जुबती की।
दलन रोग भव मूरि अमी की, तात मात सब बिधि तुलसी की।।४।।

# बापू वाणी



संत आधार है, हनुमंत उपकार है, भगवंत प्यार है, आध्यात्मिक जगत का यह त्रिकोण है।



भगवान के बारे में समझा तो जा सकता है, पर समझाया नहीं जा सकता। केवल अनुभव की बात है।


एक दुकान
जालान्स
कपड़ों का पूरा समाधान